काउबॉय की ज़िंदगी

आलेख एवं फोटो: डैनियल मिलर

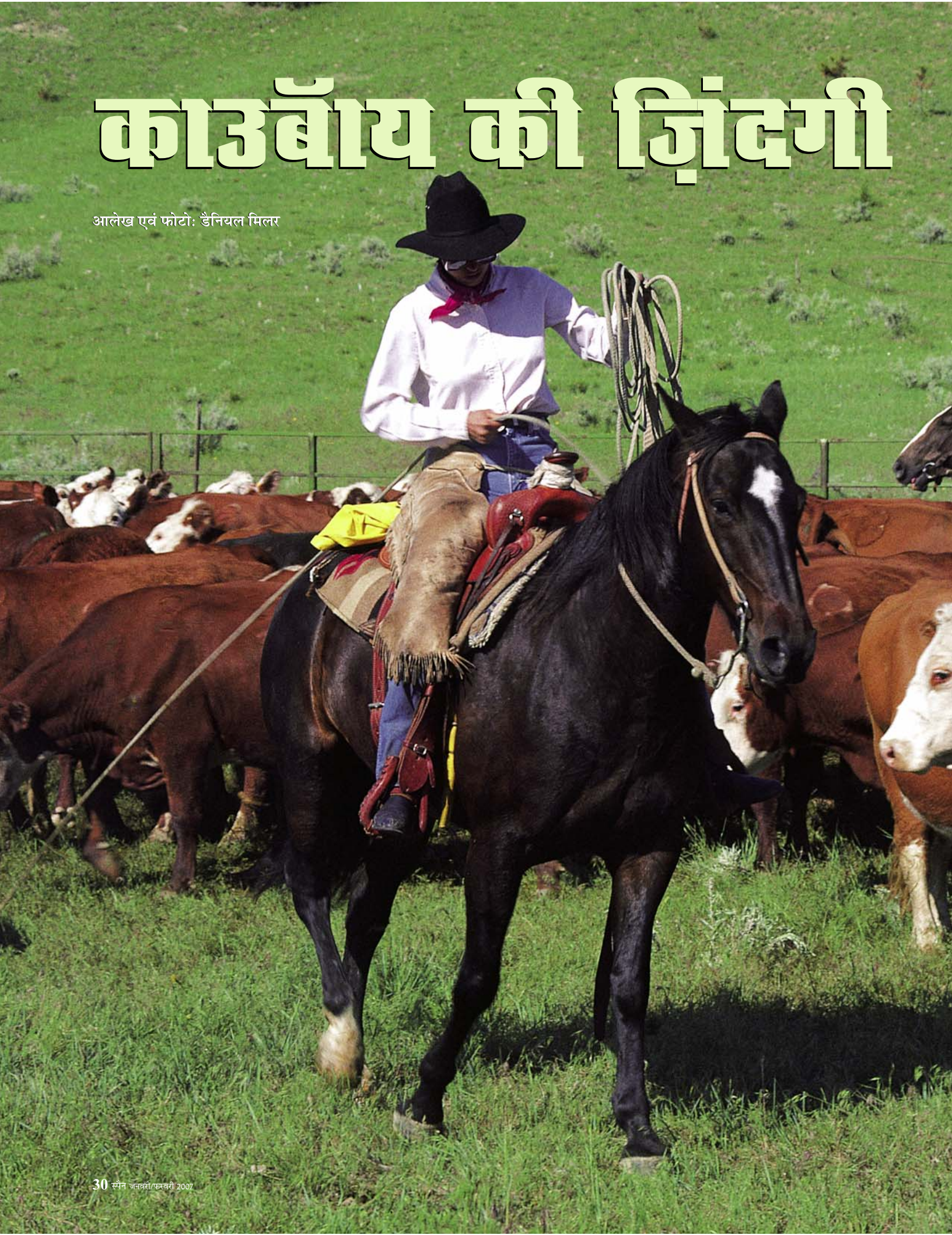

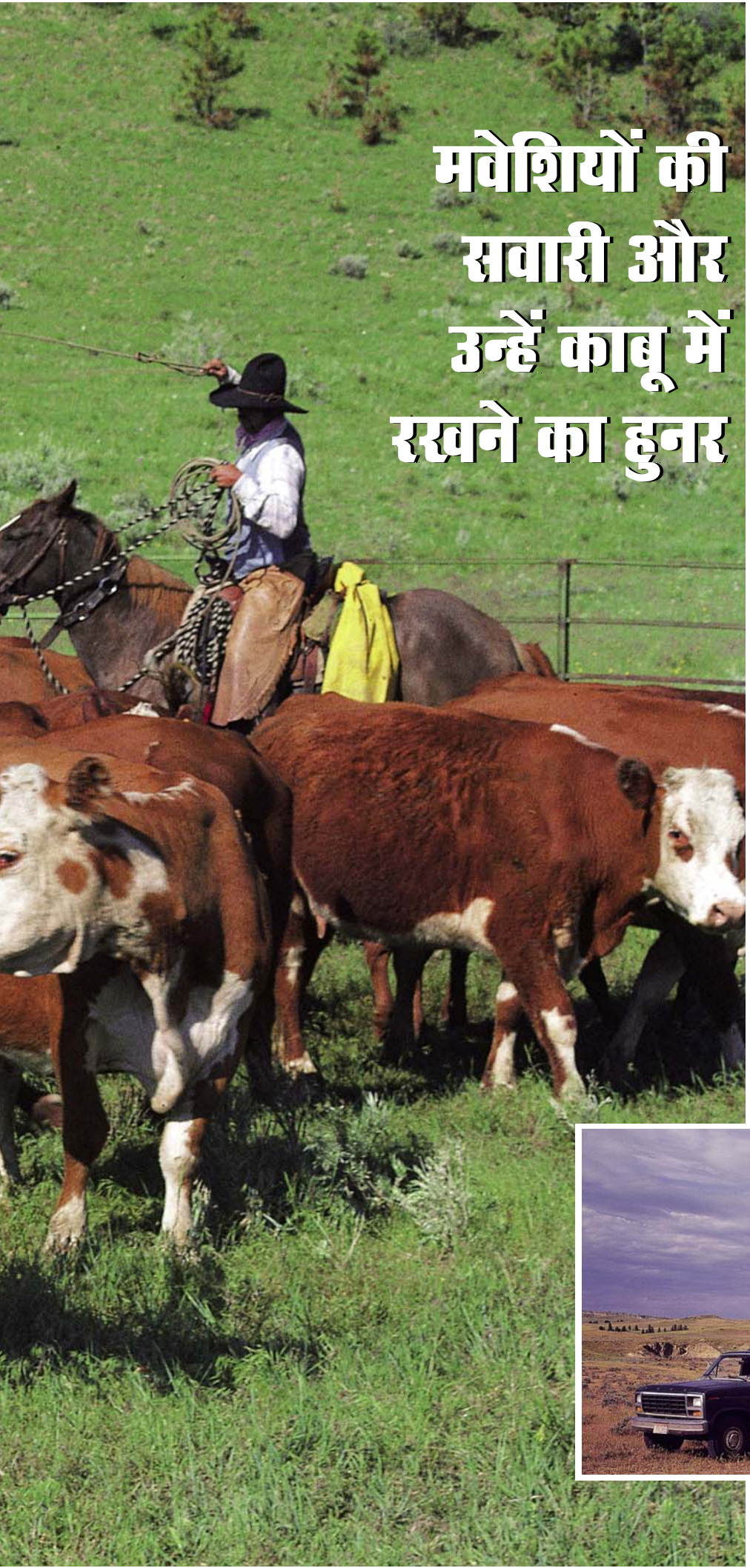

मवेशियों की सवारी और उन्हें काबू में रखने का हुनर

आंख खुलती तो पूर्व में क्षितिज पर हल्की बैंगनी झलक दिखती और तारे टिमटिमा रहे होते– यह वह स्वप्निल क्षण था जब रात गई न होती, ऊषा आई न होती! तभी कैम्प के रसोइये की पुकार सुनाई देती ''आओ, छक लो!'' उसके बाद जीनों के घोड़ों की पीठ पर कसे जाने, एड़ों की खनखनाहट और नर्म जमीन पर घोड़ों के सुमों की ताल सुबह की नि:शब्दता को तोड़ देतीं। सेज की झाड़ियों में मीडॉलार्क्स और हमारे शिविर के नीचे की ओर बहती धारा में खड़े दरियाई बाजरे के झुरमुटों में लाल पंखो वाली ब्लैकबर्ड्स प्रभाती गाने लगतीं। उधर पहाड़ी के कंधे पर कॉयॉटे का एक झुंड करुण गुहार लगाता। सूरज अभी न होता लेकिन कॉउबायों का दिन शुरू हो जाता – उनका दल गायों को चरागाह में जमा करने निकल पड़ता। रोज पौ फटने से पहले ही, 4 बजे घोड़े पर जीन – लगाम कसकर घास के विशाल मैदान खंगालने के लिए निकल पड़ना ज़्यादातर लोगों को रास नहीं आता लेकिन काउबॉय की पसंदीदा जीवनशैली का यह अभिन्न अंग है।

दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए अमेरिकी काउबॉय एक मिथकीय बिम्ब है। उनकी कल्पना का आधार अमेरिकी ''वेस्टर्न फिल्में है, जो करीब डेढ़ सदी पहले के अमेरिका के पश्चिमी सीमान्त को निरन्तर आगे धकेलने वाले आप्रवासियों और पशुपालकों के जीवन को बहुत रूमानी ढंग से प्रस्तुत करती हैं। काउबॉय की छवि का इस्तेमाल संसार के सबसे सफल विज्ञापन अभियानों में से

मोंटाना के पैडलॉक रैंच में मवेशियों को घेरते काउबॉय (बाएं)। हालांकि असली काउबॉय अब भी घोड़े पर बैठकर ही मवेशियों को घेरते हैं लेकिन आधुनिक वाहनों का इस्तेमाल भी होने लगा है (नीचे)।

दाएं: खाना पकाने के टेंट का अंदरुनी हिस्सा। चक वैगन का पिछला हिस्सा दिखाई दे रहा है जिसमें खाना पकाने से संबंधित सामग्री रखी जाती है।
बाएं: ज़रूरी सामान के साथ चक वैगन।

एक मार्लबॅरो सिगरेट के विज्ञापन में हुआ। लेवाई और रेंगलर की ब्लू जीन्स पहनने वालों में उन शहरी उपभोक्ताओं की भरमार है जो घोड़ों या गायों के पास भी नहीं फटकते लेकिन जीन्स को काउबॉय की जीवनशैली, स्वतन्त्रता और विस्तीर्ण खुले मैदानों का प्रतीक मानकर पहनते हैं। और काउबॉय ही शायद एक ऐसा कामगार वर्ग है जिसने लेखन की एक विशिष्ट शैली, सैकड़ों फ़िल्में और टेलिविज़न कार्यक्रमों, एक विशेष संगीत और यहां तक कि एक प्रदर्शन कला रॉडियो को प्रेरित किया है।

इतनी रुचि और लोकप्रियता के बावजूद काउबॉय के असली जीवन को लेकर ढेरों गलतफहमियां हैं। ज़्यादातर लोगों को लगता है कि अब काउबॉय के घोड़ों की जगह पिकअप ट्रकों, मोटर साइकिलों और हेलिकॉप्टरों ने ले ली है। सच्चाई यह है कि काउबॉय और उनके घोड़े आज भी अमेरिका के संपूर्ण पश्चिमी क्षेत्र में देखे जा सकते हैं।

मैंने कई साल पश्चिमी अमेरिका के मोंटाना राज्य में बडे-बडे रैंचों (पशुपालन फार्मों) पर काम किया है जहां आज भी सौ साल पहले की तरह खेमे डालने के लिए घोड़ा गाड़ियों पर लादकर सामान लाया जाता है। जाड़ों में हम लंबे-चौड़े बेल्जियन घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली स्लेज पर भूसा लाद कर गायों तक पहुंचाते थे। मैं काउबॉय जीवन का शौकिया अनुभव चाहने वाले लोगों के लिए चलाए जा रहे एक 'ड्यूड रैंच' पर कॉटिनेंटल डिवाइड के साथ चलते गए पहाड़ों के सिलसिले में खच्चरों के कारवां भी ले गया हूं। कई साल तक गर्मियों के महीने 40,500 हैक्टेयर से अधिक के क्षेत्र में घूमती 1,500 गायों और उनके बछड़ों की देखभाल करते काउ कैंप में बीते। 15 लॉख डालर से ज़्यादा कीमत के इस गोधन की ज़िम्मेदारी संभालने वाले इस नाचीज़ की तनख्वाह थी मात्र 500 डॉलर महीना!

काउबॉय के काम का क्रम मवेशियों के जीवनचक्र से जुड़ा हैं। बछड़े-बछड़ियां आमतौर पर जाड़ों के अन्त और वसन्त की शुरुआत में फरवरी से अप्रैल तक जन्मते हैं। इन दिनों काउबॉय की रातों की नींद हराम रहती है क्योंकि उसे गाय को प्रसव में दिक्कत होने की चिंता खाए जाती है। पहली बार प्रसव के अनुभव से गुजर रही कलोरों को खास देखभाल की ज़रूरत होती है। इसलिए उन्हें अकसर बाकी गायों से अलग कर दिया जाता है। मई और जून में गायों और बछड़े-बछड़ियों को हांककर जमा कर लिया जाता है- फिर उन्हें दागा जाता है, रोगप्रतिरोधक टीके लगाए जाते हैं और उनके सींग निकाल दिए जाते हैं; बछड़ों को बधिया कर दिया जाता है।

सर्दियों में गायों को खिलाया जाने वाला भूसा गर्मियों में ही काट कर उसकी गांठें बना ली जाती हैं, शरत् के दिनों में बछड़े-बछड़ियों से मां का दूध छुड़वाकर उन्हें ठोस आहार की आदत डालने के लिए एक बार फिर गाय-बछड़ों को इकट्ठा किया जाता है, जो गायें गर्भिणी नहीं होतीं, उन्हें अक्सर इसी समय बेचा जाता है। नवंबर के अंत और दिसंबर के शुरू में हिमपात होने पर काउबॉय गायों को भूसा दिलाना शुरू कर देते हैं ताकि वसंत में नई घास के उगने तक वह जिंदा रह पाएं।

काउबॉय के काम के वार्षिक चक्र का सबसे अच्छा हिस्सा हैं गर्मी की शुरूआत में गायों को हांककर जमा करना। 1980 के दशक में पूर्वी मोंटाना में पैडलॉक रैंच पर काम करते हुए हम लोग डेढ़-डेढ़ महीने तक गायों को हांक कर जमा करते थे। वहां पुराने तौरतरीकों से काम होता था-

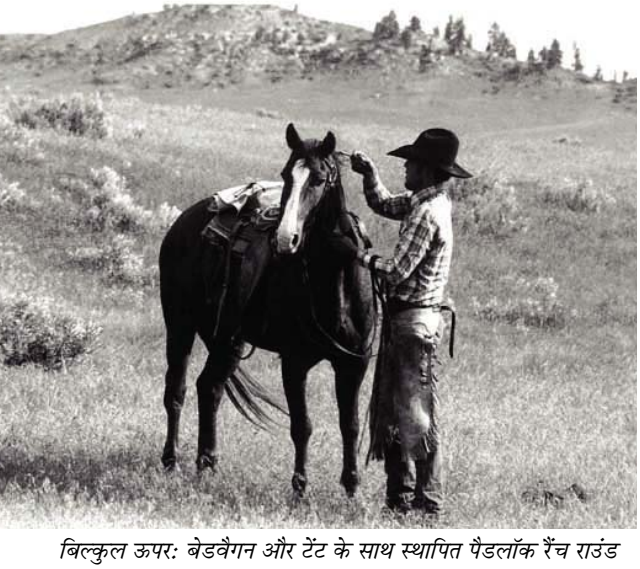

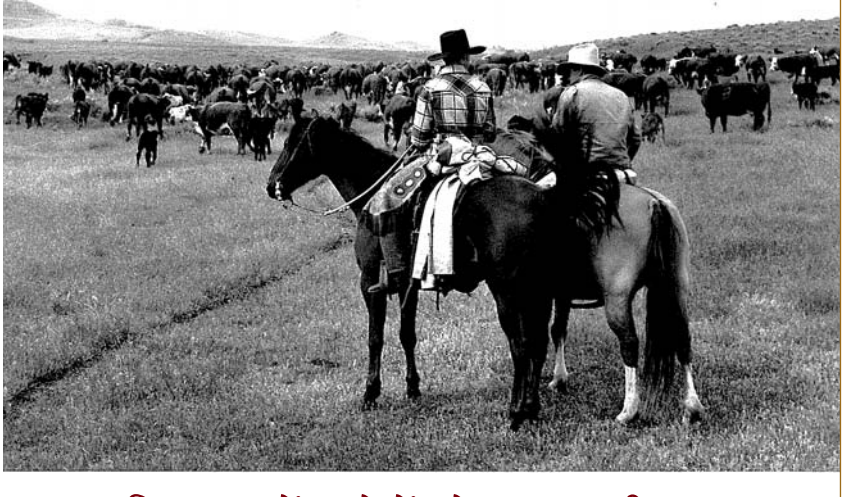

बिल्कुल ऊपर: बेडवैगन और टेंट के साथ स्थापित पैडलॉक रैंच राउंड अप कैंप। यहां काउबॉय के सोने की व्यवस्था है और चकवैगन और खाना बनाने के लिए स्थापित टेंट भी। वैगन घोड़ों द्वारा खींचे जाते हैं और टेंटों का इस्तेमाल काउबॉय आज से सौ साल पहले की तरह ही करते हैं।

ऊपर: काउबॉय यह स्वीकार करने में संकोच नहीं करते कि वे अपने घोड़ों से बाते करते हैं।

दाएं: काउबॉय मवेशियों पर कड़ी नज़र रखते हैं।

दुनियाभर में करोड़ों लोग आज भी अमेरिकी काउबॉय को लेकर तरह-तरह की कल्पनाएं करते हैं। उनके ज़्यादातर विचार फ़िल्मों या टीवी शो पर आधारित होते हैं।

हम लोग घोड़ा गाड़ियों में तम्बू-रसद लादकर ले जाते और घास के विशाल मैदानों में तम्बुओं में रहते-सोते। 12 काउबॉय रोज 100-200 बछड़ों को दागते, हर काउबॉय को सवारी के लिए चार-पांच घोड़े मिलते लेकिन उसके पास अपनी जीन और लगाम होनी जरूरी थीं। इस डेढ़ महीने में कभी बारिश आ जाती तो हम छुट्टी मनाने शहर जाते ताकि हम फुहारे से नहा पाएं और ठंडी बीयर हलक मे उंडेल लें। बारिश न भी हो तो 3,000 से अधिक गायों की संगत तो थी ही।

काउबॉय का काम कठिन, गंदा, एकाकी और कभी-कभी खतरनाक भी होता है। बछड़ों को दागना बहुत श्रमसाध्य काम है और लगभग बाज़ीगर जैसे कौशल की मांग करता है- घोड़े की सवारी करते हुए रस्से का फंदा फेंककर बछड़ों को बाड़ों में बहुत सावधानी से रखना पड़ता है।

काउबॉय के काम में जरा सी चूक का अर्थ है घोड़े या बछड़े की दुलत्ती से गंभीर रूप से घायल होना या साथियों के उपहास का पात्र बनना और बर्फानी तूफान में जब तापमान शून्य से 28 डिग्री सेल्सियस कम होता है, उस समय गायों-बछड़ों को दिन भर भूसा खिलाना किसी भी तरह आन्नददायी नहीं कहा जा सकता। बिजली-नल के पानी के बिना आबादी से 16 किलोमीटर दूर बियाबान में तंबुओं में रहने का मतलब है अक्सर अपने घोड़े से बतियाना।

मैं जिस जमाने में काउबॉय हुआ करता था, उन दिनों काउबॉय को करीब 500 डॉलर महीना और 'खाना-रहना मुफ़्त' मिलता था, 'रहना' यानी घास के बियाबान विस्तार में गड़ा तम्बू और 'खाना' लेकिन जरा सोचिए 'ड्यूड रैंचों' में छुट्टियां बिताते हुए जिस काम को करने के लिए लोगों को ढेरों पैसे देने पड़ते हैं, उसी काम को करने के लिए हमें पैसे मिलते हैं।

इस काम से जुड़े कुछ पहलुओं की कीमत पैसों में नहीं आंकी जा सकती। मैं पूर्वी मोंटाना के जिस क्षेत्र में गायें हांकता था, वह वैसी ही जगह थी जिस का काउबॉय सपना देखते हैं- विशाल खुले मैदान, बिगहॉर्न नदी के किनार-किनारे ऊपर की ओर उठकर पाँडेरोसा चीड़ों से ढकी पहाड़ियों के पार टंग नदी के साथ-साथ पूरब की ओर लिट्ल वुल्फ माउंटेनस तक बिखरे घास के झुरमुट। यह उत्तरी अमेरिका के घास के मैदानों में से सबसे बढ़िया क्षेत्रों में से है। मई के अंत में टुलॉक क्रीक के उद्गम के पास की ऊंची ढलानें एरोलीफ के

समय के साथ आए बदलाव के बावजूद आज भी काउबॉय द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली बहुत सी चीज़ें सैकड़ों साल पुरानी हैं। इनमें से कई चीज़ों की शुरुआत 16वीं शताब्दी में मेक्सिको में हुई जब उस पर स्पेन का शासन था।

बाएं से दाएं: 1. घोड़े को दिशा देने के लिए लगाम के साथ लगी होती है चांदी की एक पत्ती। 2. काउबॉय की गद्दी के साथ एक थैला भी होता है जिसमें खाने-पीने का सामान रखा जाता है। 3. काउबॉय के पैर रखने के लिए रकाब। काउबॉय ने अपनी जींस के नीचे बूट पहन रखे हैं और पैरों को रगड़न से बचाने के लिए चमड़े का बना पट्टेनुमा वस्त्र पहन रखा है। 4. काउबॉय के खास जूते जिनमें पीछे की ओर एड लगे होते हैं जो जरूरत पड़ने पर घोड़े को तेज भगाने में काम आते हैं। 5. बेडवैगन जो काउबॉय के बिस्तर को ले जाने के काम आता है। इस पर घोड़े का साज भी लटका है।

घेरना और जब गर्म-लाल लोहा उन की चमड़ी को जला रहा हो और बछड़ों को बधिया किया जा रहा हो, उस समय उन्हें जकड़ कर जमीन पर टिकाए रखना। बधिया बछड़े और बैल उग्र नहीं होते और वे मोटे भी जल्दी होते हैं जबकि सांडों को अलग यानी ढेरों मांस-आलू, सेमें और सुअर का मांस और कड़वी कॉफी। आजकल एक नई जीन की कीमत 1500 डॉलर से शुरूआत होती है और घुड़सवारी के जूतों की 200 डॉलर से। काउबॉय का काम करते हुए आप रईस कभी नहीं हो पाएंगे बड़े-बड़े पीले फूलों, बाल्समरूट और लूपाइन के चमकीले नीले फूलों से ढक जाती हैं। चोकचेरी के कुंजों में जंगली गुलाब की झाड़ियां हवा को सुगंधित बनाती हैं। घोड़े के पसीने, जीन के चमड़े और घोड़े के खुरों से कुचली सेज बूटी की गंध

घोड़ों को घेरकर एक जगह लाया जाता है जिससे कि काउबॉय अगले दिन के लिए अपना चुनाव कर सकें। हर काउबॉय चार-पांच घोड़ों में अदला-बदली करता रहता है जिससे कि उन्हें आराम मिल सके।

एक दुर्लभ सुगंध यानी काउबॉय कोल्गोन तैयार करती है। सूर्य को उगते और ढलने देखना, झुटपुटा होते होते ही तारों का छिटकना भी आनंदित करते हैं।

ज़्यादातर काउबॉय अपनी गायों के विशिष्ट व्यवहार को समझते हैं- जैसे एक-डेढ़ मील दूर पानी पीने गई गायों के बछड़े-बछियाओं की देखभाल करती, धीरज से बैठी 'बेबी सिटर गायें'। बछड़ों की मांओं के लौटने पर ये गायें पानी पीने जाती हैं।

गायों को हांककर घेरते हुए काउबॉय विभिन्न रैंचों और घुड़सवारी के साजसामान के गुण-दोषों पर विशद चर्चा करते हैं। अपने दल के मुखिया से मिली तारीफ या साथियों का कहना कि 'आदमी बढ़िया है' काउबॉय के दिन के बहुत बढ़िया क्षण होते हैं। पड़ोसी रैंचों पर साथियों की मदद और अमेरिकी संस्कृति में काउबॉय को परिभाषित करने वाले मूल्यों-परोपकार सहकारिता -को बनाए रखने से मिले संतोष की कीमत कैसे आंकी जाएगी?

दो साल अफगानिस्तान में काम करने के बाद छुट्टी पर घर लौटने पर पिछली गर्मियों में मैं उस दोस्त से मिला जिसके साथ बीस साल पहले पैड-लॉक रैंच पर काउबॉय का काम किया था। काउबॉय के मुखिया का बेटा डेविड वर्कमैन उन दिनों मोंटाना स्टेट यूनिवर्सिटी में पशुविज्ञान का छात्र था और मेरे साथ गायें घेरने जाता था। अब वह एक बड़े रैंच का प्रबन्धक है। फ्लैट विलो क्रीक से कच्ची सड़क पर डेविड के रैंच की ओर बढ़ते मैंने पाया कि बाड़ें नई और मजबूत थीं और चारागाह भी बहुत बढ़िया दिख रहे थे- यह इस तथ्य के छोटे-छोटे संकेतक हैं कि रैंच की देखभाल अच्छी तरह हो रही है। खुले ट्रक में रैंच घूमते हुए डेविड ने मुझे कुंओं पर लगवाए सौर-ऊर्जा संचालित पम्प और चारागाहों में खरपतवारों को नष्ट करने के लिए किए जा रहे कामों के बारे में बताया, उसने मुझसे रैंच के चारागाह सुधारने और उसकी आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने की योजना पर भी चर्चा की, आजकल रैंच प्रबन्धकों को गायों की देख-भाल के साथ-साथ कंप्यूटर पर काम करना भी आना चाहिए।

लेकिन डूबते सूरज को देखते डेविड और मैं अपने पुराने घोड़ों और साथियों की ही चर्चा कर रहे थे।

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजें।

डैनियल मिलर *भारत में अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी (यूएसएड) के परियोजना विकास अधिकारी हैं। उन्होंने वर्ष 2003 में यूएसएड में काम शुरू किया। वह मिनेसोटा के एक डेयरी फार्म पर पले-बढ़े और कई साल मोंटाना में काउबॉय रहे। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ मोंटाना से वानिकी में स्नातक की उपाधि पाई। मिलर ने अफगानिस्तान में कई कृषि परियोजनाओं का ज़िम्मा संभाला है। उन्होंने भूटान, चीन, मंगोलिया और नेपाल में पशुपालन विकास के क्षेत्र में भी काम किया है।*